International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 04(II), October - December, 2023, pp. 156-160

जयसिंह द्वितीय के कार्यकाल में चित्रकला शैली

डॉ. अंजना राव*
देवेंद्रा**

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास में राजस्थान का अपना एक अलग स्थान है। कई छोटे–छोटे राज्यों के सम्मिलित भूखण्ड को पहले राजपूताना कहा जाता था यह नाम कर्नल जेम्स टॉड ने दिया था। राजस्थान अपने शौर्य एवं स्वाभिमान तथा स्वतन्त्रता प्रेम के लिए प्रसिद्ध रहा है। यहाँ शौर्यता के साथ–साथ कला को भी प्रोत्साहन मिला है। राजस्थान की चित्रकला अपने आप में अद्‌भुत रही है। राजस्थानी चित्रशैली भित्ति चित्रों, संग्रहालयों विभिन्न कार्यलयों में बड़े स्तर पर विद्यमान है। जो परम्परा के रूप में प्रागेतिहासिक काल से अब तक स्पष्ट अदृश्य रूप में मौजूद रही है। के०पी० जायसवाल ने राजपूताना की चित्रकला का जन्म ग्याहरवीं शताब्दी में बने उदयादित्य द्वारा एलोरा में बनाए गए चित्रों से माना है। आठवीं शताब्दी से पूर्व ही राजपूताना में चित्रकला की अपनी निजी समृद्ध परम्परा रही थी। अजन्ता शैली से प्रभावित गुर्जर– प्रतिहार काल के समय से ही राजपूताना में कला का नया रूप विकसित हुआ जिसे अपभ्रंश शैली कहा गया। अपभ्रंश शैली, जैन शैली तथा पश्चिमी भारतीय शैली के रूप में पद परिवर्तन के साथ राजपूताना चित्रशैली की और प्रविष्ट होती हुई राजस्थानी शैली के रूप में 16वीं शताब्दी में मौलिकता ग्रहण की हालॉकि इसका मूल स्रोत अपभ्रंश शैली ही था। आनन्द कुमार स्वामी ने राजस्थानी चित्रकला को राजपूत शैली एवं पहाड़ी शैलीयों के रूप में मान्यता दी है।

राजस्थानी चित्रकला के इतिहास में जयपुर शैली का महत्वपूर्ण स्थान है। जयपुर कलम के उद्‌भव एवं विकास से आशय उस चित्रकला से है जो जयपुर के गर्भ से जन्म लेकर विकसित हुई है। जिस प्रकार राजस्थानी शैली में कई शैलियाँ अपना निजस्व लिए हुए है। उसी प्रकार जयपुर कलम की चित्राकृत्तियों में विषयगत विविधताएँ भी हैं तथा धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, उत्सव, शिकार आदि पर आधारित 'महाभारत', 'रागमाला', 'दुर्गापाठ', 'मधुमालती', 'रागरागिनी', 'कृष्णलीला', 'नायक– नायिका भेद', 'भागवतपुराण', 'दुर्गासप्तशती', 'बिहारी सतसई', 'रामायण' आदि विषयों का कलामय अंकन कलाकृत्तियों में देखने को मिलता है जो कि हवेली, महल, छतरी, भवन, देवालय आदि की भित्तियों व छतों पर लघु चित्र, भित्ति चित्र व ग्रन्थ चित्र आदि का चित्रांकन फ्रेस्को, टेम्परा (मोराकसी, आराईस, आलागीला), वसली आदि पर किया गया है। जयपुर कलम का चित्रांकन परम्परागत शास्त्रीय शैली पर आधारित है। यहाँ पर राजाओं, सम्राटों ने अपने–अपने शासनकाल में अपनी रुचि के अनुरूप ही चित्रण कार्य करवाया है जो कि उल्लेखनीय रहा है।

गुलाबी नगर के नाम से प्रसिद्ध राजस्थान राज्य की राजधानी जयपुर अपने नगर नियोजन, वास्तु–सज्जा, पर्यटन तथा सांस्कृतिक और कलात्मक विरासत के लिए विश्व प्रसिद्ध है। ललित कला प्रेम की धारा सदा ही यहाँ के कच्छवाहा राजघराने में प्रवाहित होती रही है। कच्छवाहा राजपूतों की यह रियासत सदैव कला संस्कृति का केन्द्र रही और आज भी राजस्थान के सांस्कृतिक वैभव की प्रतिनिधि परिचायक है। अन्य राजपूत राज्यों की तरह जयपुर राज्य भी प्राचीनकाल में राजपूताना की एक रियासत था। जयपुर के आस पास

* एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा।
** शोधार्थी, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा।

का क्षेत्र प्राचीन काल में जयपुर राज्य का ही एक भाग रहा है। आमेर कच्छवाहों का यह गौरवमय राज्य मध्यकाल में 'ढूंढाड़' प्रदेश के नाम से जाना जाता था। इस भू–भाग में अनेक प्राचीन सभ्यताऐं पल्लवित एवं पुष्पित हुई। पाषाणकाल में यहाँ मानव संस्कृति के विद्यमान होने के प्रमाण पुरातात्विक शोध से प्राप्त हुए है। यहाँ से प्राप्त विभिन्न कालान्तरों के अस्थि–पंजर, कंकाल, प्रस्तर– औजारों, हड्डियों, मृदभाण्डों, ताम्र उपकरणों, मुद्राओं, आभूषणों, अभिलेखों, कलात्मक अवशेषों एवं नगरीय खण्डहरों से इस अवधारणा की पुष्टि हो जाती है कि प्रारम्भ से ही यह क्षेत्र मानव संस्कृति एवं कला का गढ़ रहा है।

राजस्थान की समृद्ध रंगचित्रों और विषय वैविच्य जैसी विशेषताओं वाली जयपुर शैली ने रजवाड़ों से लेकर आमजन के सामाजिक जीवन को दर्शाने में इस शैली में विभिन्न भावनाओं को व्यक्त करने वाली मुद्राओं का चित्रण और रंगों का प्रयोग अनूठा है। सरलता, सुंदरता और स्पष्टता के संतुलित संयोजन के साथ जयपुर शैली का कोई बराबरी नहीं है। यहाँ के शासक ईश्वरी सिंह के समय इस शैली में राजा महाराजाओं के बड़े–बड़े आदमकद चित्र अर्थात् पोट्रेट दरबारी चित्रकार साहिब राम द्वारा तैयार किए गए। इस शैली पर राजस्थान में मुगल चित्रकला का सर्वाधिक प्रभाव रहा है। महल–हवेलियों के निर्माण के साथ भित्ति चित्रण जयपुर की विशेषता बनी। बड़े पोट्रेट की परंपरा जयपुर शैली की विशिष्ट देन है। सवाई रामसिंह के समय बादल महल में मदरसा–ए–हुनरी की स्थापना की गई।

जयपुर शैली

जयपुर शैली को कछवाह शैली के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि नरवर के शासक सोड़ादेव के पुत्र ढोलाराम ने बड़गुजरों को हराकर ढूंढ़ाड़ में अपना राज्य स्थापित किया। कोकिल देव ने 1036 में मीणों को हराकर अजमेर जीतकर अपनी राजधानी बनाया तथा सन् 1527 में बाबर के विरुद्ध खानवा की लड़ाई में आमेर के शासक पृथ्वी राव ने युद्ध में भाग लिया था। पृथ्वीराज के बाद 1548 ई० में भारमल आमेर की गद्दी पर आसीन हुए। भारमल प्रथम राजपूत शासक था जिसने मुगल सत्ता को स्वीकार कर अपनी पुत्री जोधाबाई का विवाह 1562 में अकबर के साथ कर दिया। यह प्रथम राजकुमारी थी जिसके कारण मुगल राजपूत सम्बन्धें में विशेष रूप से राजनैतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक व्यवस्था में विशेष बदलाव हुए। भारमल के बाद राजा मान सिंह उनके बाद मिर्जा राजा जयसिंह आमेर की गद्दी पर बैठा। मिर्जा राजा जयसिंह के समय मुगल उत्तराधिकार का युद्ध हुआ। इस समय ही आमेर शैली मुगलों की शैली प्रभावित होकर शाही शैली प्रधान हो गई। मिर्जा राजा जयसिंह के बाद 1667–68 में रामसिंह तथा 1668–99 में बिशन सिंह आमेर की गद्दी पर बैठे।

सम्राट रामसिंह और बिशन सिंह के पश्चात् महाराज सवाई जयसिंह द्वितीय (1699–1743 ई०) ने राजगद्दी संभाली। इन्होंने जयनगर के नाम से एक नया नगर बनाया तथा इनके समय में 'सिसोदिया रानी महल', 'सिटी पैलेस', 'नानाजी की हवेली', 'चूर सिंह की हवेली', 'भवानीराम बोहरा का मन्दिर', 'पुण्डरीक जी की हवेली' आदि में भित्ति चित्र बनवाये हैं। ये भित्ति चित्र 18वीं शताब्दी के हैं। इन चित्राकृत्तियों में जयपुर व मुगल कलम के लघु–चित्रों की साम्यता दृष्टव्य है व अन्य भवनों के बीच की कृत्तियों में 'गोपियों एवं गायों के साथ बाँसूरी बजाते कृष्ण', 'शेषशायी विष्णु' व 'रामदरबार' चित्रित है। इन हवेलियों के निकट चार देवालय निर्मित है – 'राम कुँवरजी', 'नृत्यगोपाल जी', 'सीतारामजी', 'रघुनाथजी' आदि। इनके प्रमुख द्वार के ऊपर की ओर चित्रण हुआ है। इसमें 'कांटा निकालती नायिका', 'राधाकृष्ण चौपड़ खेलते', 'अंगड़ाई–लेती नायिका', 'शुक–सारिका' आदि छोटे–छोटे चित्रों का अंकन है तथा 'ज्ञान–गोपालजी के मन्दिर' की बाहरी भित्तियों पर 'राम–रावण युद्ध', 'जुलूस', 'होली' आदि का चित्रांकन टेम्परा तकनीक से किया गया है। इनके समय में 'ताल कटोरा', 'चन्द्रमहल' व 'जयनिवास बाग' जैसी इमारतें भी बनवायी गयी हैं तथा 'पुण्डरीक की हवेली' में 'गणगौर की सवारी', 'शिकार', 'बारहमासा' व 'फूल–पत्तियों' के अलंकरण आदि का चित्रण हुआ है। 'भवानीराम बोहरा के मन्दिर' में सफेद प्लास्टर पर आला– गीला पद्धति में भित्ति चित्रांकन हुआ है। इसका आकार (24×24) फीट है। जो 'महाभारत' व 'रामायण' पर आधारित है। 'सिसोदिया रानी का महल' इसके भित्ति चित्र फ्रेस्को बूनो तकनीक में

चित्रांकित है। 'गोविन्द देवजी के मन्दिर' में 'गोपियों संग होली खेलते श्रीकृष्ण', 'राम दरबार', 'शिव पार्वती', 'कृष्ण राधा' आदि विषयों पर अराईस तकनीक में चित्रण कार्य हुआ है तथा मोती घनश्याम जी की हेवली के चित्र 'एक स्त्री –उबासी लेते हुए', 'राम सीता हनुमान', 'नायिका शीशा देखते हुए', 'श्रीकृष्ण पेड़ के नीचे बाँसूरी बजाते हुए' आदि चित्रों का अंकन हुआ है। अतः 'सिटी पैलेस' में सम्राटों के 'व्यक्ति चित्र', 'हाथी की लड़ाई', 'श्रीनाथ जी', 'चौगान में घोड़ें की लड़ाई आदि का चित्रांकन है।

जयपुर शैली की विशेषताएँ

- मानवाकृत्तियों में नारी के एकचश्म व गोल चेहरे मीनाकृत नेत्र, ऊँचा–ललाट, लम्बी नाक, लम्बे केश तथा नारी आकृति मध्य कद की बनी है। पुरुषाकृति मध्य कद की व भरा हुआ शरीर, ऊँचा ललाट अंकित किया गया है। गोल मुख, मीन नयन, गोल नाक, मोटे ऊधर, दाड़ी व लम्बी मूँछे बनी हैं।

- नारी आकृति को वेशभूषा में अलंकरण युक्त लहँगा, चुन्नटदार घाघरा व पारदर्शी व गोटेदार चुनरी, डोरीदार ऊँची चोली चित्रित है। पुरुषों में लम्बा घेरदार जामा, अंगरखा, दुपट्टा, पटका, पंचरंगा पगड़ी निर्मित है।

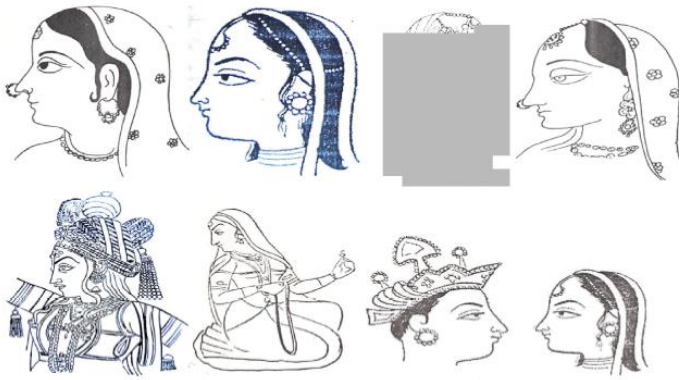

- यहाँ पर स्त्री आकृति के आभूषणों में नासिका में नथ, माथे पर बोरला, कानों में कर्णफूल अंकित किये हैं। गले में कंठी व हार पहने चित्रित किया गया है। हाथों में बाजूबन्द, चूड़ियाँ, कड़े, अँगूठी, छल्ला व हाथफूल चित्रित है। कटि पर तगड़ी निर्मित्त है। पैरों में बिछिया, पायल व जयपुरी जूतियाँ अंकित है तथा पुरुषों के कानों में कुण्डल अंकित है। गले में कंठी व जंजीर निर्मित्त की गयी है। हाथ में बाजुबन्द, छल्ला, अँगूठी आदि चित्रित है तथा माथे पर टीका, पैरों में जयपुरी जूतियाँ निर्मित्त है।
- जयपुर कलम में खनिज, वानस्पतिक, रासायनिक, जैविक व सोने–चाँदी, नीला, पीला, लाल व चटकीलें वर्णो का प्रयोग किया गया है तथा पैमाना चित्रकृति के अन्तराल को उत्तम स्वरूप प्रदान करता है। जयपुर के चितेरो ने प्रमाण चयन में अलग–अलग विधियों का प्रयोग किया है। कहीं–कहीं यथार्थवादी, परम्परागत तो कहीं कल्पनात्मक। सामान्यतः स्त्री आकृति सिर का छः गुना व पुरुषाकृति सात गुना बनी है।

- यहाँ पर कलाकारों ने क्षयवृद्धि के सिद्धान्त द्वारा आकारों के मध्य दूरी को सुस्पष्ट किया है। जयपुर के कुछ चित्रकारों को छोड़कर बाकी सभी इस सिद्धान्त पर खरे उतरे हैं। इस दृष्टिपात से जयपुर कलम के कलाकारों ने मुगल चित्रकारों का अनुकरण किया है। कलाकृति में इसके स्पष्ट दर्शन होते हैं तथा यहाँ के कलाकारों ने मुगल शैली के रेखा निरूपण को भी विशेष महत्व दिया है तथा बाहरी रेखाओं के द्वारा छाया–प्रकाश को उभारा है। पुरुष आकृति व नारी आकृति के बालों के चित्रांकन में रेखीय वर्तना का प्रयोग किया गया है। शरीर में उभार, गोलाई व कठोरता दिखाने के लिए चित्राकृत्तियों में तीन वर्तना (पत्रज, रेखीक, बिन्दुज) का प्रयोग किया गया है।

- चित्राकृतियों में नायक–नायिका का चित्रण प्रतीकात्मक (आत्मा–परमात्मा) रूप में किया गया है तथा चित्रों के हाशियों को आलेखन, बेलबूटों से सुसज्जित किया है। यहाँ पर पशु–पक्षियों, चूहा, गरूड़, चीता, गाय, बैल, घोड़ा, मोर, सारस, बत्तख, तोता, कबूतर, ऊँट, हाथी आदि का चित्रण कलाकृतियों में दृष्टव्य है और कहीं–कहीं इनको प्रतीक रूप में भी चित्रित किया गया है। अतः जयपुर शैली या इनकी दीवारों पर पेड़ पौधों का चित्रांकन इनको सुसज्जित करने हेतु उत्कृष्ट ढंग से किया गया है। जयपुर सूरतखाने के कलाकार अपनी उत्कृष्ट चित्रांकन परम्परा के लिए राजस्थान में अपना एक अलग स्थान बनाये हुए थे। ये चित्रण चित्रकार पीढ़ी दर पीढ़ी अपनाते रहते थे और आज भी कुछ चित्रकार घराने ने इस परम्परा को संजोया है।

इस प्रकार जयपुर शैली के कलाकारों ने भारतीय परम्परा के अनुरूप चित्राकृत्तियों 'विष्णुधर्मोत्तर पुराण', 'समरांगण सूत्रधार', 'चित्रलक्षण', 'कुवलयमाला' एवं 'समराइच्च' में प्रस्तुत चित्रकर्म के सिद्धांतों का पालन किया है। जयपुर कलम की चित्राकृति कलात्मक दृष्टिपात से अपनी एक विशेष पहचान रखती है जो स्वयं में एक आदर्श है। साथ ही अनुकरणीय उदाहरण है जो आज वर्तमान समय में भी अभिप्रेरणा का कार्य करती है। इसका कला संसार में कलात्मक योगदान चिरस्मरणीय कहा जाये तो शायद कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

निष्कर्ष

भारतीय चित्रकला की सर्वश्रेष्ठ चित्रशैली अजंन्ता एलोरा की गुफाओं की चित्रशैलियाँ रही हैं। इनसे ही चित्रकला का उद्भव एवं विकास हुआ है। अपनी इन पर्वूवर्ती शैलियों से प्रभावित होती हुई तथा अनेक समकालीन शैलियों से प्रभावित एवं परवर्ती शैलियों को प्रभावित करती हुई राजस्थानी चित्रकला ने विभिन्न राजपूताना के राज्यों में पोषित होने वाली शैलियों एवं उपशैलियों का रूपधारण कर चित्रकला जगत् को विशेष

रूप से समृद्ध किया। इस शैली ने जयपुर, शैली के स्वतंत्र एवं मुगलिया प्रभाव के अंर्तगत पूर्ण अंकन की महान परम्परा के प्रभावपूर्ण सतरंग राधा कृष्ण के गुलाबी सौन्दर्य अंकन शैली से राजस्थानी चित्रकला का जो प्रारूप सम्मुख आता है वह जैसा कि कुमार स्वामी ने कहा है, भारतीय चित्रकला का उत्कृष्ट स्वरूप है तथा विश्व की महान् शैलियों में स्थान पाने योग्य है। इस प्रकार अपने आप में यह शैली स्वतंत्र, भव्य एवं सुकोमल लावण्य प्रधान शैली है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ० पुष्यमित्र सिंहदेव, जयपुर का इतिहास एवं पुरातत्त्व, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2014
2. डॉ० मोहनलाल गुप्ता, जयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2020
3. डॉ० गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा–3,
4. डॉ० प्रदीप कुमार, सवाई जय सिंह के समय जयपुर चित्रकला शैली और उसका तत्कालीन समाज पर प्रभाव, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ हिस्ट्री, 4 (2), 2022
5. कुमारी मीना, जयपुर भित्ति चित्रों का कलात्मक संसार, शोध मंथन, वॉल्यूम 9, नम्बर 3, जुलाई–सितम्बर 2020
6. रीना शर्मा, जयपुर शैली में शाही चित्रकार साहिबराम का योगदान, एनथोलॉजी : दॉ रिसर्च, वॉल्यूम 5, इश्यू 6, सितम्बर 2020
7. कैलाश चन्द्र, भारतीय इतिहास में सवाई जय सिंह के शासन काल में जयपुर चित्रकला शैली का समाज पर प्रभाव, इन्टरनेशल जर्नल फार मल्टीडिसप्लनेरी रिसर्च (आईजेएफएमआर), वॉल्यूम 5, इश्यू 3, मई–जून 2023
8. डॉ० दिव्या शर्मा, शैली निर्धारक तत्वों के आधार पर विवेचन ''जयपुर शैली'', शोध मंथन, वॉल्यूम 8, नम्बर 4, अक्टूबर–दिसम्बर 2019

❖◆❖